अंतरा-शब्दशक्ति

अंतर्मन के अंकुर

काव्य संग्रह

अर्चना अनुप्रिया

अंतर्मन के अंकुर

(काव्य संग्रह)

अर्चना अनुप्रिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-94-0

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- अर्चना अनुप्रिया
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Antarman ke Ankur by Archna Anupriya

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

संवेदनशील मन जब भी अपने आसपास कुछ घटते देखता या सुनता है, प्रतिक्रिया करता है....कभी कहकर, कभी लिखकर।मेरा अंतर्मन भी हर वक्त हालातों के प्रति जागरूक रहा है और यही कारण है कि अपनी भावनाओं को अक्सर मैंने कविताओं, कहानियों में ढालने की कोशिश की है।ईश्वर की प्रार्थना से लेकर मन के दार्शनिक होने तक की यात्रा हर दिन के जीवन के अनेक छोटे-बड़े अनुभवों से गुजरती है।साड़ी की तहों में पुराना खत पाकर जहाँ मन बीते दिनों के खूबसूरत लम्हों को याद करता है, वहीं जीवन की क्षणभंगुरता (जीवन..एक बुलबुला)पर भी विचार करता है...एक तरफ जहाँ बादलों से प्रेम बरसाने की गुजारिश (बरसा दे प्रेम) करता है, वहीं दूसरी तरफ आज के इन्सानों के अंदर के जहर (सर्पों की सभा) से भी चिंतित है... फिर इसी संदर्भ में जीवन जीने की कला (जीना कुछ इस तरह) भी बतलाने की कोशिश करता है और पूरी तरह आशान्वित है.. (आशा), (इंतजार)। इस तरह प्रस्तुत काव्य संग्रह में मैंने दिन प्रतिदिन के हालात और जज्बात को ध्यान में रखकर मन में अंकुरित होने वाले भावों को कविता के माध्यम से सबके समक्ष रखने की कोशिश की है।उम्मीद है, मेरा यह प्रयास पाठकों को पसंद आयेगा और वे इस पुस्तक में अपने मनोद्गारों को अनुभव करेंगे।

'ओम् शांति'

अर्चना अनुप्रिया

अनुक्रमणिका

1.	गणेश वंदना	7
2.	अराधना	8
3.	प्यारा खत	9
4.	शिक्षा	10
5.	परिवर्तन	11
6.	न्याय की जीत	12
7.	मंत्र जीने का	13
8.	जानवर और इन्सान	14
9.	विचार	15
10.	परिणाम	16
11.	मन की अभिलाषा	17
12.	अहसास दिल का	18
13.	प्रतिबिंब	19
14.	चिराग	20
15.	जीना कुछ इस तरह से	21

16.प्रेम की होली 22

17.सड़कें 23

18.इंतजार 24

19.आशा 25

20.क्या करे 26

21.जीवन...एक बुलबुला 27

22.सर्पों की सभा 28

23.नारी 29

24.सीख बादलों की 30

25.बरसा दे प्रेम 31

26.किराये का घर 32

गणेश वंदना

हे चतुर्भुज...........मूषकवाहन
महा गणपति.......क्षिप्रप्रसादन
महाबलो, महावीर, महामना
रुद्र प्रिय, गजाध्यक्ष, गजानना
एकदन्त, महाकाय, लम्बोदर
दयावंत, तू विघ्नों का नाशकर
जय गणेश गणनाथ, दयानिधि
विघ्न विनाशक, सिद्धिविनायक
ज्ञान के दाता...बुद्धि विधायक
शिव के लाला, गिरिजा नंदन
शीश नवाकर.. करूँ मैं वंदन
कृष्ण पिंगाक्ष... सुर: प्रियायः
रक्षा-कवच..... . हे महाकाय
गौरीसुत,रिद्धि-सिद्धि के भर्ता
शिव के नंदन, सर्व विघ्नहर्ता
है धूम्रवर्ण.......जीवन-आधार
है भालचंद्र.......सर्वशांतिकार
है गणाधिपति,शुभता के कारक
कृपा सिंधु, गज वदन, विनायक
मोदकप्रिय..... मुद-मंगल धाम
हे गणपति....तुझे मेरा प्रणाम!

अराधना

नव प्रभात में नव दुर्गा साधना,
करुँ ह्रदय से माँ,तेरी आराधना;
प्यार, विश्वास का दीप जलाकर,
'अहं'- तेरे चरणों में चढ़ाकर ;...
करुँ भावों के पुष्प मैं अर्पण,
स्वयं को तुझमें करुँ समर्पण ;
अनमोल संस्कारों के वस्त्र चढ़ाऊँ,
तप और प्रार्थना के शस्त्र सजाऊँ ;...
सब्र और शक्ति है वाहन तेरा,
हौसलों के रूप में आवाहन तेरा ;
विजय-कुंकुम का तिलक ललाट पर,
चरण पखारूँ तेरा ह्रदय के घाट पर;...
हे माँ दुर्गे.., हे...जगदम्ब -भवानी,
हे सिद्धि दात्री,हे जगत कल्याणी;
कोई भी नारी अब बलि चढ़े ना,
दुराचारियों का अब दम्भ बढ़े ना;...
मेरी अखंड पूजा स्वीकार करो माँ,
जीवनदायिनी का अवतार धरो माँ;
खोले बैठी हूँ अपने मन के द्वार,
ममता बरसा दो मुझपर अपरम्पार;...
चरितार्थ हमारी भक्ति कर जाओ,
हर नारी की अटूट शक्ति बन आओ;
अब आओ माँ..माँ...अब आओ..।

प्यारा खत

साड़ी की तहों के बीच,
एक खत पुराना मिला...
यादों के दरवाजे खोल कर,
वो गुजरा हुआ जमाना मिला...
बिखर गए मोती बीते लम्हों के,
उन्हीं में वह खोया दिल दीवाना मिला...
बचपन की मस्ती और अल्हड़पन के बीच,
रंगीन गुब्बारों का उड़ाना मिला...
कुछ दोस्तों की खुशबू फैल गई,
फिर बात-बात पर हँसना-मुस्कुराना मिला...
टेढ़े-मेढ़े मासूम अक्षरों के बीच,
अटका हुआ वो प्यारा दोस्ताना मिला...
फैली सी स्याही और भीगे हुए शब्दों में,
भीग कर वो बरसात में नहाना मिला..
वो सारे बिछड़े खुशनुमा लम्हें
और, वो जादुई वक्त मस्ताना मिला...
फटे से धूमिल लिफाफे में मुझे,
मत पूछ कि क्या क्या खजाना मिला..।

शिक्षा

शिक्षा से है जीवन का अर्थ
शिक्षा बिना सब कुछ है व्यर्थ
शिक्षा हमें हर पल जगाती
आगे बढ़ने की राह दिखाती
अधिकारों का पाठ पढ़ाये
कर्तव्य करने की चाह जगाये
जीवन हमारा ज्ञान से भर दे
अंधकार को आलोकित कर दे
दासता की बेड़ियाँ काटे
हर जन में संस्कार बाँटे
सभ्यता का आधार है शिक्षा
आस्था, संस्कृति,व्यवहार है शिक्षा
असभ्यता की दलदल हटा दे
इन्सानियत की अक्ल सिखा दे
कोई अगर दौलत से तौले
शिक्षा का बाजार जो खोले
अलख जगायें,अभियान चलाये
शिक्षा का पुनर्निर्माण करायें
ऐसी शिक्षा जो समय के साथ हो
समाज के उत्थान की बात हो
पशु और मनु का अंतर है शिक्षा
शांति, सुकून का मंतर है शिक्षा
हर मन में कर दें ज्ञान को संचित
कोई न रह जाए समाज में वंचित..।

परिवर्तन

जीवन तो चलता ही रहता है,
लोग गिरते हैं, उठते हैं
फिर संभलते हैं...
मौसम तो बदलता ही रहता है,
पतझड़ जाता है, बसंत आता है,
पत्ते फिर निकलते हैं...
गहरा अँधेरा हमेशा डराता है,
रात के बाद ही सवेरा आता है,
दिलों में उमंग फिर पलते हैं...
नफरत दूरियां बढ़ाता है,
प्रेम सबको जोड़ता है,
लोग हाथ थामकर फिर चलते हैं..
यह मंत्र हमें याद दिलाता है,
परिवर्तन नियम है प्रकृति का,
बिगड़े रंग रंगीन में फिर ढलते हैं...
इसीलिए जब बुरा वक्त आता है,
हमेशा ये याद रखें, ये हमीं हैं, जो
बुराईयों को अच्छाइयों में बदलते हैं..।

न्याय की जीत

देर भले ही हो चाहे,
न्याय कभी भी झुकता नहीं..
झूठ भले ही हावी हो,
सच के आगे टिकता नहीं...
हो रावण या शकुनि का छल,
अपराध कभी भी फलता नहीं...
विश्वास हनन कर जश्न करे,
वो इन्सान कभी खुश रहता नहीं...
जमीर खरीदने वाले सुन,
सैलाब आँसुओं का बिकता नहीं...
ये डंडा ऊपरवाले का,
गुनहगारों पर कभी रुकता नहीं...
आज भले तू खुश हो ले,
कर्मों का लिखा कभी टलता नहीं...
बोये वृक्ष बबूल के जो,
उसे आम कभी भी मिलता नहीं...।

मंत्र.. जीने का

एक चिंगारी ही काफी है, घर जलाने के लिए;
उम्र चाहे बीत जाए, घर बनाने के लिए..
मूर्ख मत सबको समझिए,
छीनकर अधिकार को;
बांटिए अधिकार भी, अधिकार पाने के लिए..
कर्तव्य भी कुछ कीजिए,
सिर्फ जश्न ही मंजिल नहीं;
'कर्तव्य'ही बस है कसौटी, रब को दिखाने के लिए..
जीत की खातिर न सब कुछ,
ताक पर रख दीजिए;
दिल में हो कुछ कशिश भी, जीने-जिलाने के लिए..
छोड़कर कुछ फुलझड़ी,
मुश्किल न पैदा कीजिए;
होते नहीं रास्ते हमेशा, मुश्किल मिटाने के लिए..
घृणा, हिंसा, दुश्मनी या
अलगाव मत फैलाईए;
ये बड़े ओछे तरीके हैं,
दिल में रखिए प्यार, मुहब्बत, वही सबसे जताइए;
दुनिया तभी है आपकी,जब हैं आप जमाने के लिए..।

जानवर और इन्सान

लोग पालने लगे हैं जानवर
इन्सानों से भरोसा उठ सा गया है...
शहर में अब मँहगे हो गए हैं कुत्ते
वफादारी से इन्सानी रिश्ता टूट सा गया है..
आलीशान घरों में, गाड़ियों में
जानवरों की बढ़ती हुई शान तो देखो..
सड़कों पर सोने को बेबस है जिंदगी
अहं के नशे में गिरा इन्सान तो देखो...
अजीब चलन है, अजीब सा है मंजर
ठोकर खाकर भी सोये हुए हैं लोग..
इन्सानों के शहर में है जंगल सा माहौल
न जाने किस दुनिया में खोये हुए हैं लोग?
हरियाली है वन में, खुशहाली है वन में
जानवरों में भाईचारा बढ़ने लगा है..
अंतरिक्ष की ऊँचाई नापकर
क्या होगा भला?
इन्सान तो पहले से ज्यादा गिरने लगा है...।

विचार

किसी भी सृजन का मूल बीज है विचार
है यह मानव- मस्तिष्क का उर्वरक व्यवहार
विकास की कामना,कभी विनाश की भावना
विचार में ही समाहित है सदाचार या दुराचार
सुख-दुख न बाहर है, न है तन के अंदर
सुविचार से मन सुखी,
वरना दुख में रहो लाचार,
जीवन जीना भी कला है,भला हो या बुरा
प्रसन्नचित्त और सकारात्मक हो,
तो सदा खुशहाल है संसार,
विचार नींव है संस्कृति की,
प्रगति की, या अधोगति की,
विचारों में ही छुपा हुआ है
हर समाज का संस्कार,
बड़े बनना नहीं है,
दौलत या दिखावे की जागीर,
उदार सोच और ऊँचे विचार ही हैं,
बड़प्पन के आधार,
खुद पर भरोसा, ईश्वर पर आस्था,
कर्मों पर विश्वास -
मानव तभी जीवित है जब
मन-मस्तिष्क में उठें विचार।

परिणाम

जब चारों तरफ हो भ्रष्टाचार
हो दीन-हीन पर अत्याचार
परिणाम यह मृत मानवता का
जब न्याय भी हो बेबस,लाचार..

नारी का उचित स्थान न हो
कानून का भी परिणाम न हो
है नैतिक पतन का नतीजा यह
जब वृद्धों का सम्मान न हो..

कृषकों का हक भी अटल रहे
सीमा पर वीर भी सफल रहें
परिणाम यह तब हो पायेगा
जब नीति, न्याय अचल रहे..

स्वस्थ कर्म का स्वस्थ नतीजा
कोई विकल्प है और न दूजा
उन्नत न्याय और सुकृति अगर हो
तभी होगी संस्कृति की पूजा.

अपने वतन का मान बायें
हर कदम न्यायोचित उठायें
परिणाम सदा तब होगा अच्छा
सबको सकारात्मक दिशा दिखायें..।

मन की अभिलाषा

है चाह मेरी इस धरती पर
भारत माता का गान रहे
जब तक अस्तित्व ब्रह्मांड का हो
अखंड ये हिन्दुस्तान रहे..

इच्छा मेरी कि दुनिया में
माँ भारती का संस्कार फले
लहराए तिरंगा अम्बर में
मानवता का आचार पले..

'वसुधैव कुटुम्बकम्' जियें सभी
सबके मन में ये अभिलाषा हो
ज्ञान का खिले प्रकाश जहाँ में
हिमालय-सी उत्तम आशा हो..

कण-कण से निकले प्रेम मधुर
सब साथ रहें, यही मनोकामना
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई
एकजुट हो करें अरि का सामना..

चाहे कुछ भी हो अनहोनी
जग में भारत की शान रहे
जब तक अस्तित्व ब्रह्मांड का हो
अखंड ये हिन्दुस्तान रहे..।

अहसास... दिल का

आँखों की नमी बता रही है,
दिल में बुझा सा कोई,
वक्त पर रुका सा कोई,
अहसास है शायद...
जिंदगी में किसी तन्हाई का,
असर है किसीकी बेवफाई का,
या फिर टूटा हुआ कोई
विश्वास है शायद..

फिजा.भी जरा गुम सी लगती है,
हर शय अब’तुम’सी लगती है,
फलक का चाँद भी
बदहवास है शायद..
गरज है क्या मुझे दुनिया की
तेरी सूरत इन आँखों में रहे,
उम्र की ढलती शमां की,
यही इक आस है शायद..

जिंदगी रुकी सी है उसी मोड़ पर,
इंतजार है इन आँखों को तुम्हारा,
ये उम्मीद कि तुम लौट आओ
मेरे लिए खास है शायद..
जर्रे-जर्रे में ढूँढ़ती हैं तुम्हें निगाहें,
तू मेरी रूह में छुपी है, ऐ जिंदगी,
मेरे वजूद से लिपटी, खिलखिलाती,
तू मेरे ही पास है शायद...।

प्रतिबिंब

हे कान्हा…
जहाँ भी देखूँ, तेरा साया देखूँ,
मन को तुझमें, भरमाया देखू,
हर फूल में तू, हर काँटे में भी,
सुख-दुख में तेरी ही, छाया देखूँ..

है मानव तेरी ही परछाई,
ये तुझमें डूबकर ही समझ आयी,
तेरे ही अंश, हर जीव धरा के,
तेरी ही मूरत अपने अंदर पायी..

हर रचना में है तेरा श्रृंगार,
हर कर्म का बस तू ही आधार,
सत्य और शिव है तेरा प्रतिबिम्ब,
सुन्दरता सृजन की अपरम्पार..

हम सब पर इतनी कृपा करो,
हे परमशक्ति, हे जगत पिता,
तेरे साये में फूलें फलें हम,
बनें तेरा प्रतिबिंब, करें सब पर दया..

हर पल हमारा ध्यान तुम रखना,
हे कान्हा, तुम बिन जी लगे ना,
बन रही हूँ मैं अब तेरी परछाई,
अनोखा बड़ा है तेरे प्रेम को चखना..।

चिराग

अकेले ही दुश्मनी मोल
ले ली हैअँधेरे से मैंने,मुझे
पता है कि चारों तरफ की
हवा के खिलाफ हूँ मैं
चिराग हूँ मैं,है मेरा वजूद
हौसलों से भरा हुआ,
न जाने कितनों की उम्मीदों
भरी आवाज हूँ मैं...
बार-बार अँधेरा मुझ पर
हावी होने को है
हर बार उसकी कोशिश
कर देता नाकाम हूँ मैं..
उजालों का सिपाही हूँ
अँधेरा मिटाना फर्ज है मेरा
युगों से धरती पर सबको
राह दिखाता आया हूँ
सबकी बेबस तन्हाई का
इकलौता राजदार हूँ मैं..
ऐ दुनिया,मुझे छोटा
समझने की भूल न करना
पल में सबकुछ खाक बना दूँ,
ऐसी भयानक आग हूँ मैं..।

जीना...कुछ इस तरह से

गृहस्थी को साड़ी के पल्लू से बाँधकर,
रिश्तों के उतार-चढ़ाव से मन को साधकर,
दिन-रात की छोटी-छोटी खुशियों से
प्रेम की चुस्कियां ले लेती हूँ,
इस तरह मैं जीवन जी लेती हूँ...

हँसी-ठिठोली से थकन उतारकर,
प्राकृतिक सौगातों से खुद को संवारकर,
दोस्तों के लबों पर मुस्कान के श्रृंगार से,
खुद में हरियाली बिखेर लेती हूँ,
इस तरह मैं जीवन जी लेती हूँ...

उधड़े जज्बातों को लफ्जों से सीकर,
दुनिया की कड़वाहट को दवा जैसे पीकर,
मुश्किल हो जाये जब लड़ना हालात से,
दामन से काँटे झटक देती हूँ,
इस तरह मैं जीवन जी लेती हूँ...

बंद आँखों में मेरी जब सपने निहारते हैं,
जरूरतों के मेले जब भी मुझे पुकारते हैं,
जब बढ़ने लगें पैर और चादर हो छोटी,
ख्वाहिशों को अपने तालों में जड़ती हूँ,
इस तरह मैं जीवन जी लेती हूँ...।

प्रेम की होली

जो तेरे रंग में रंग जाऊँ,
तो मेरी होली हो जाये..
गर तेरे प्रेम का भंग खाऊँ,
तो मेरी होली हो जाये..
लोगों के रंग तो फीके हैं,
कुछ कड़वे हैं, कुछ तीखे हैं,
पकवानों सी मिठास नहीं,
रिश्तों में वो विश्वास नहीं,
बस, तू हमजोली हो जाये,
तो मेरी होली हो जाये...

हरी धरती का बने गुलाल,
मिट्टी से जुड़े हम,बनें लाल,
पीली सरसों सा खूब खिलें,
खुशी में रंगें हम, सबसे मिलें,
नीले आसमां सा फैला मन हो,
हरी हो बगिया, सिंदूरी आंगन हो,
इन्द्रधनुषी जीवन हो सबका,
सबके सिर पर हाथ हो रब का,
अब प्रेम-ठिठोली हो जाये,
हर दामन प्रेम से रंग जाये,
तो बस, मेरी होली हो जाये....।

सड़कें

सरपट भागती सड़कें पल भर में
कितनी दूर निकल जाती हैं और मैं
बाट जोहती रहती हूँ किनारों पर
यादों की, उन पलों की,जिनपर चलकर
अपने बने थे कई अनजान चेहरे
फिर याद आते हैं वे मोड़,जहाँ से
सबके रास्ते अलग हुए थे,
कुछ अहसास लिए जमीन पर खड़े थे,
कुछ अपने अहं से लिपटे पड़े थे,
मंजिल सबकी एक ही थी
पर,जिंदगी अलग-अलग
मोड़ तो सबके जीवन में था
पर, नजरिया अलग-अलग
चलना तो हर किसी को है
पर,कुछ देर रुककर जरूरी है
सोचना,खुद को तौलना
हर अच्छे-बुरे रास्तों से गुजरना
जब तक मंजिल न मिले, चलते रहना
अथक परिश्रम और विश्वास में ही
कुछ पाने की खुशी है..
सड़कें प्रमाण हैं, इस बात का
कि रफ्तार ही जिंदगी है...।

इंतजार

इंतजार है तेरा,ऐ खुशी..
स्वीकार कर मेरा ये पैगाम,
गहन अँधियारा चारों तरफ है,
तू चँदा की चाँदनी पर
चलकर हौले से आ....
ऐ हँसी, दूर क्यों खड़ी है?
तू खिलखिलाकर तारों सी बिखर जा,
दर्द का पहरा हटाकर तू
फूलों सी निखर जा...
ऐ मुस्कान, दुबकी सी क्यों है?
आ,अधरों से मिल जा,
देख, मुरझाया सा चेहरा है,
जा,जाकर चेहरे पर खिल जा...
उठ जा,ऐ मस्ती,
क्यों मन में है सोई?
देख,दूर अंतरिक्ष से
झांक रहा है कोई,
और दे रहा है एक संदेश-
अँधेरा दूर हो चला है,
उजाला बस होने को है,
मायूसी दूर होगी जिंदगी की,
अब ईश्वर सुख बोने को है...।

आशा

नया सूरज,नयी आशाएँ,
नयी कोमल कल्पनाएँ,
सब कुछ संभव है....
जरा मुस्कुरा तो दो।

रिश्ते तुम्हारे, दोस्त तुम्हारे
सारी दुनिया तुम्हारी,
अपने अंदर का अहं....
जरा मिटा तो दो।

हर जीव खुश, नदी-नाले खुश,
प्रकृति की हर बात खुश,
मन पर पड़ी उदासी....
जरा हटा तो दो।

न बीता साथ, न भविष्य अपने हाथ,
किसके वश में सारे हालात?
समय से 'आज का पल'....
जरा चुरा तो लो।

खुदा यहीं, स्वर्ग यहीं,
जीना इतना भी बुरा नहीं,
अपनी सोच सकारात्मक....
जरा बना तो लो।

क्या करें...

अब हार ही गए तो रोकर क्या करें
बेकार का दर्द दिल में संजोकर क्या करें?
हारना,जीतना,गिरना,उठना तो चलता रहेगा,
आँखों को आँसुओं में डुबोकर क्या करें?
क्यों तोड़ें हिम्मत, क्यों न जोडें हौसला,
अपने हाथों अपनी हस्ती खोकर क्या करें?
आशा का दीप जलायें,उम्मीद का दामन थामें
निराशा से अपनी रूह को धोकर क्या करें?
क्या थी अपनी गलती, मेहनत तो की ही थी,
रास्ते के पत्थर से लग गई ठोकर, क्या करें?
हारे भी तो क्या हुआ, सबक तो सीखे हम,
सँभलें अब आगे,कमजोर होकर क्या करें?

जीवन...एक बुलबुला

ये जीवन क्या है?
पानी का बुलबुला है,
टूटता है, बनता है,
लहरों के साथ-साथ घूमता है,
दूर तक जाता है कभी
कभी पल में डूबता है,
क्षणिक है,नश्वर है,पर
खूबसूरत है, सुन्दर है
कैद कर लो इसे अपनी आँखों में
जी भर जी लो इसे रूह की पाखों से
तर जाओ इसमें असीम सागर सा है
यह अनंत है
निरंतर चलायमान है
यह सतत जीवंत है
बनता, बिखरता यह जीवन
एक सिलसिला है,
कर्मों से बँधा है पर
फूलों सा खिला है,
खुशबू बनकर बिखर जाओ
प्रकृति को आत्मसात करो निखर जाओ,
समय थोड़ा है,बस यही गिला है,
हाँ, ये जीवन तो बस बुलबुला है।

सर्पों की सभा

कई साँपो की सेना ने,
आज ये जुलूस निकाला है,
क्यो मनुष्य ने छोड़ के नेकी,
डंसने का काम संभाला है ?

हम बेकार ना हो जाएँ,
साँपों का नेता था चिंतित,
उन सारे विष का क्या होगा
जो थे हमारे मुख में संचित ?

आस्तीन में भी मानव हैं,
रहने का बड़ा झमेला है,
कुछ असर नहीं हमारा है,
अब आदमी खुद विषैला है ।

कर्म गलत करते पहले,
फिर डर बिलों में जा बसते हैं,
हम सब से ज्यादा शातिर हैं,
ये अपनों को भी डसते हैं ।

सब सर्पों ने स्वीकार किया
मनु-केंचुल चमकीला है,
हमारी तो औकात ही क्या,
मानव सबसे जहरीला है ।

नारी

नारी की रचना से पहले विधाता ने
सोचा तो क ई बार होगा
इसी साहसी जीव के ऊपर संसार के
सृजन का भार होगा,
पर उस बनाने वाले ने तो कभी
कल्पना भी नहीं की होगी
कि जहाँ में जननी बनकर भी उसका
अपना ही ना कोई अधिकार होगा।
प्रेम,त्याग,विश्वास,ममता की मूर्ति
इस रूप से तो प्यार होगा,
लेकिन दुनिया को अपने स्वार्थ के आगे
नारी का हक ना स्वीकार होगा ।
देख नारी की दुर्दशा समाज में
ईश ने दृढ़ किया ये विचार होगा,
नारी शक्ति की पुनः स्थापना हेतु
अब बदलना यह संसार होगा ।
तभी सब ललनाएँ जाग उठी हैं,
कोई श्रम ना अब बेकार होगा,
हर घर की बेटी जब मान पाएगी
तभी तो जग में बहार होगा ।

सीख बादलों की

सीख लो जीवन जीने की कला
आवारा बादलों से,
फक्कड़ से घूमते हैं,
यद्यपि गोद मे संजीवनी भरी पड़ी है,
आसमान है नियति उनकी
पर जमीन पर उतरने को आतुर,
ना कोई अहं,ना घमंड,
सबकी प्यास बुझाता, राहत देता,
बार-बार हवा भगाती,
फिर भी सूखे नदी-नाले भर जाता,
हँसता, लरजता,
चमकता, गरजता,
जीवों के सुख में खुश होता,
दुःख में उनकी आँखों से बरसता,
नेक संदेश देता कि -
मस्त रहो और सबका करो भला
सचमुच हम बादलों से सीख लें,
जीवन जीने की कला।

बरसा दे प्रेम

ऐ सावन की
काली घटा,
बरसा दे कुछ
ऐसी बूँदें प्रेम की,
जिनसे इन्सानियत भींग जाए..
ऐ बादल,
गरज कुछ ऐसे
कि लोगों के मनभेद ढह जाएँ..
ऐ बिजली,
चमक कुछ ऐसे
कि भटकों को सही राह मिले..
ऐ फलक,
बरसा ऐसी रसधार
कि अहं चूर हों,नफरतें बह जाएँ..
ऐ बारिश,
ऐसे बरस
कि नाराजगी के
पर्वत चीरकर
आपसी सौहार्द के झरने फूट जाएँ..
ऐ धरा,
इस सावन
कुछ ऐसा कर
कि मानवता के बीज पनपें,
और सभी मैं से हम हो जाएँ...।

किराये का घर

किराये के घर का
गुमान तो देखो..
मूर्ख है कैसा
इन्सान तो देखो..
'काया' हो या 'माया'
अपनी कहाँ है..?
पर हर घड़ी यही दोनों
सबका सपना यहाँ है..
अपने घर जाना है सबको
सब कुछ यहीं छोड़कर..
फिर क्या पाता है इन्साँ
कागज के टुकड़े जोड़कर..?
नीयत और कर्म ही
सबके साथ जायेंगे..
संस्कारों से ही हम
सुखद फल पायेंगे..
इसीलिए अपने अहं और मोह
हम छोड़ दें..
कर्तव्य करें अपना और
दिल से दिल को जोड़ लें..
नेकी और सत्कर्म
हमें इन्सान बना देंगे..
हमारे शुद्ध मन हमारे अंदर ही
भगवान दिखा देंगे...।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - अर्चना अनुप्रिया

जन्म - पटना (बिहार)

शिक्षा - एम.ए., एल.एल.एम., पी.जी.डी.बी.एम., फैशन डिजाइनिंग

पता - फ्लैट 7/ए, टॉवर-2, न्यू मोतीबाग, नयी दिल्ली - 110023

संपर्क नं. - 9727555225

कार्य - - अधिवक्ता एवं शिक्षिका

प्रकाशन - पत्र पत्रिकाओं में यदा-कदा रचनाओं का प्रकाशन।
सांझा संग्रह में रचनाओं का प्रकाशन।
आकाशवाणी में साहित्यिक वार्ता।

सम्प्रति - स्वतंत्र लेखन एवं समाज सेवा।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-94-0

मूल्य- 55/-